Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ अहोई अष्टमी व्रत कथा ॥

॥ जय अहोई माता ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ अहोई अष्टमी व्रत कथा ॥

एक माता और उसके सात पुत्रों की प्रचलित लोककथा का सरल हिंदी रूपांतरण। विभिन्न क्षेत्रों में कथा के प्रसंग अलग मिलते हैं।

प्राचीन समय की बात है। एक गाँव में एक स्त्री अपने परिवार के साथ रहती थी। उसके सात पुत्र थे। वह बच्चों से बहुत प्रेम करती थी और परिवार की देखभाल में लगी रहती थी। कार्तिक मास में दीपावली निकट आई तो उसने घर की लिपाई और सजावट की तैयारी की।

एक दिन वह घर लीपने के लिए मिट्टी लेने जंगल के पास गई। जिस स्थान पर वह मिट्टी खोद रही थी, वहाँ स्याहु अर्थात साही का बिल था। उसे भीतर रहने वाले छोटे बच्चों का ध्यान नहीं रहा। कुदाल चलाते समय अनजाने में साही के बच्चे को चोट लगी और उसकी मृत्यु हो गई।

यह देखकर स्त्री बहुत दुःखी हुई। उसने किसी जीव को हानि पहुँचाने का विचार नहीं किया था, फिर भी उसके हाथों यह घटना हो गई थी। पश्चाताप करते हुए वह घर लौट आई। उस छोटे जीव की याद उसके मन में बनी रही।

कथा के इस रूप में कहा जाता है कि कुछ समय बाद उसके सातों पुत्र एक-एक करके लापता हो गए। बहुत खोजने पर भी उनका पता नहीं चला और गाँव के लोगों ने उन्हें मृत मान लिया। बच्चों के वियोग से व्याकुल माता ने गाँव की एक वृद्धा को अपना दुःख सुनाया। उसने मिट्टी खोदते समय हुई घटना भी बताई।

॥ माता की कृपा और कथा का फल ॥

वृद्धा ने उस स्त्री को सांत्वना दी और अहोई माता की आराधना का मार्ग बताया। उसने कहा कि कार्तिक कृष्ण अष्टमी को श्रद्धापूर्वक व्रत और पूजन करे तथा अहोई माता के साथ स्याहु और उसके बच्चों का चित्र बनाए। सभी जीवों के प्रति दया रखकर माता से क्षमा और बच्चों के मंगल की प्रार्थना करे।

अष्टमी आने पर स्त्री ने साफ स्थान पर माता और स्याहु का चित्र बनाया। उसने श्रद्धा से व्रत रखा, संध्या में दीपक जलाकर पूजा की और अपनी भूल के लिए क्षमा माँगी। उसके हृदय में बच्चों के प्रति प्रेम के साथ सभी जीवों के प्रति करुणा का भाव था।

लोककथा के अनुसार, उसकी सच्ची प्रार्थना से अहोई माता प्रसन्न हुईं और उसे संतान-सुख का आशीर्वाद दिया। उसके सातों पुत्र जीवित घर लौट आए। परिवार में फिर आनंद छा गया। माता ने देवी को प्रणाम किया और प्रतिवर्ष अहोई अष्टमी का पूजन करने का संकल्प लिया।

कथा का फल और संदेश

यह कथा संतान के मंगल की कामना से पढ़ी और सुनी जाती है। इसका भाव करुणा, अहिंसा, भूल स्वीकार करने और अच्छे आचरण की ओर लौटने से जुड़ा है। लोककथा के प्रसंगों को किसी परिवार के वास्तविक दुःख का दोष माँ पर लगाने का आधार न बनाएँ।

हे अहोई माता! सभी बच्चों को प्रेम, सुरक्षा और सुख का आशीर्वाद दें। हमारे मन में प्रत्येक जीव के लिए दया बनी रहे।

॥ जय अहोई माता ॥